بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد


# Office of The sadar Majlis Ansarullah Bharat

## دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com


सारांश खुत्बः जुम्अः सैय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीहिल अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक **16.03.2018** मस्जिद बैतुल फ़तूह लंदन।

**सहाबा किराम रिज़वानुल्लहि अलैहिम अजमओन आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सीरत के रौशन प्रमाण हैं, अब कोई व्यक्ति इन प्रमाणों को नष्ट करता है तो वह मानो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नुबुव्वत को नष्ट करना चाहता है। अतः वही व्यक्ति आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सच्चा आदर कर सकता है जो सहाबा किराम का आदर करता है। जो सहाबा किराम का आदर नहीं करता वह आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का आदर नहीं करता।**

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक अवसर पर सहाबा रिज़वानुल्लाहि अलैहिम अजमओन का स्तर बयान करते हुए फ़रमाते हैं कि सहाबा किराम रिज़वानुल्लाहि अलैहिम अजमओन आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जीवन चरित्र के सुन्दर प्रमाण हैं अब कोई व्यक्ति इन प्रमाणों को नष्ट करता है तो वह मानो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नुबुव्वत को नष्ट करना चाहता है। अतः वही व्यक्ति आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सच्चा आदर कर सकता है जो सहाबा किराम का आदर करता है। जो सहाबा किराम का आदर नहीं करता वह आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का आदर नहीं करता। क्यूँकि ऐसा कभी नहीं हो सकता कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से प्रेम हो तथा सहाबा से दुश्मनी। आपने फ़रमाया कि सहाबा किराम की वह पवित्र जमाअत थी जो अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कभी अलग नहीं हुई तथा आपके लिए जीवन बलिदान करने से भी कभी पीछे नहीं रहे। फ़रमाते हैं कि वे आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आज्ञापालन में ऐसे गुम हो गए कि उसके लिए प्रत्येक कष्ट और दुविधा उठाने के लिए सदैव तय्यार थे।

अतः यह वह स्तर है सहाबा रिज़वानुल्लाहि अलैहिम का जो प्रत्येक अहमदी को अपने सामने रखना चाहिए। सहाबा रज़ी. का जीवन चरित्र हमारे लिए उदाहरण है तथा हमें उनको अपने जीवन का अंश बनाने का प्रयास करना चाहिए। इस समय मैं कुछ सहाबा के वृत्तांत बयान करूँगा-

एक सहाबी अबू दजाना अन्सारी थे, उन्होंने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मदीना हिजरत से पहले इस्लाम क़बूल किया था, मदीना के रहने वाले थे, बदर की लड़ाई में शामिल हुए तथा बड़ी बहादुरी के जौहर दिखाए। इसी प्रकार ओहद के युद्ध में शामिल हुए तथा इन्हें तौफ़ीक़ मिली और युद्ध की काया पलटने के बाद जो सहाबा आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निकट रह गए थे उनमें हज़रत अबू दजाना भी शामिल थे और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बचाव में यह बड़े ज़ख़्मी भी हो गए थे किन्तु उन घावों के बावजूद पीछे नहीं हटे।

यमामा के युद्ध में मुसैलमा कज़्ज़ाब के विरुद्ध आक्रमण करते हुए आपने शहादत पाई। उन्होंने बड़ी वीरता से दुर्ग का द्वार खोलने के लिए जो भीतर से बन्द हो गया था एक युक्ति की और अपने साथियों से कहा कि मुझे दीवार के अन्दर फेंक दो, बड़ी ऊँची दीवार थी। इस प्रकार जब उनको फेंका गया तो गिरने से उनकी टाँग टूट गई लेकिन इसके बावजूद बड़ी वीरता से लड़ते हुए दुर्ग का द्वार खोल दिया तथा मुसलमान भीतर दाख़िल हो गए और इस अवस्था में वे लड़ते हुए शहीद हुए। एक बार रोग के कारण अपने साथी से कहने लगे कि सम्भवतः मेरे दो कर्म अल्लाह तआला क़बूल कर ले। एक यह कि मैं कोई व्यर्थ बात नहीं करता, लोगों की पीठ पीछे उनकी बातें नहीं करता, दूसरे यह कि किसी मुसलमान के लिए मेरे मन में राग द्वेष नहीं है।

फिर हज़रत मुहम्मद मुस्लिमा का वर्णन मिलता है जो आरम्भिक मुसलमानों में से थे, बड़े वीर और निर्भीक इंसान थे। ओहद के युद्ध में मुहम्मद बिन मुस्लिमा बड़ी वीरता से आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ डटे रहे। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक अवसर पर उनको अपनी तलवार प्रदान करते हुए फ़रमाया कि जब तक शिर्क करने वालों के साथ तुम्हारा युद्ध हो, इस तलवार से युद्ध करते रहना और जब ऐसा युग आए कि मुसलमान आपस में लड़ने लग जाएँ तो यह

तलवार तोड़ देना तथा अपने घर बैठ जाना यहाँ तक कि कोई तुम पर आक्रमण करे अथवा तुम्हारी मृत्यु हो जाए। उन्होंने इस निर्देश के अनुसार ही किया तथा हज़रत उसमान रज़ीयल्लाहु अन्हु की शहादत के पश्चात उस तलवार को तोड़ दिया तथा लकड़ी की एक तलवार बनाई जो मियान में लटकाते थे। कुछ सहाबा कहते थे कि हज़रत उसमान की शहादत के बाद मुसलमानों में जो उपद्रव शुरु हुआ, उसका यदि किसी पर प्रभाव नहीं हुआ तो वह मुहम्मद बिन मुस्लिमा थे, उन्होंने इन उपद्रवों से बचने के लिए वीराने में डेरा डाल लिया।

अतः ये वे लोग थे जिन्होंने जब युद्ध किया तो उसके लिए आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का आदेश था कि मुशरिकीन जो दीन को नष्ट करने के लिए आक्रमण कर रहे हैं, उनसे लड़ो। जब तक मुसलमान इस बात पर क़ायम रहे तो उनकी शक्ति भी ऐसी रही कि वे ग़ालिब आते रहे तथा जब आपस में लड़ाईयाँ शुरु हुईं, जब मुनाफ़िक़ों की बातों में आकर आपस में एक दूसरे की गर्दनें काटने लगे तो निःसन्देह शासन तो चलते रहे परन्तु एकता नहीं रही तथा धीरे धीरे फिर शासन भी दुर्बल होता गया और आज हम देखते हैं कि मुसलमानों के आपस जो मतभेद हैं वे अपनी चरम सीमा को पहुंच गई है तथा आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की एक अन्य भविष्य वाणी भी पूरी हो चुकी है कि अन्धेरे युग के बाद जब प्रकाशीय युग आए, मसीह मौऊद का युग आए तो मसीह मौऊद को मान लेना तथा जमाअत के साथ जुड़ जाना कि इसी में बरकत है। किन्तु इस आने वाले को न मानकर मुसलमान अपने ही देशों में एक दूसरे के ख़ून के प्यासे हो रहे हैं तथा इसी का परिणाम है कि आज ग़ैर मुस्लिम दुनिया क्रियात्मक रूप से मुसलमानों पर शासन कर रही है।

एक भाग्यशाली आरम्भिक सहाबी हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी थे जिनको मदीने में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आतिथ्य का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मक्का से हिजरत के बाद उन्हीं के घर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने निवास किया। ऊपर के भाग में अबू अय्यूब अन्सारी रहते थे, नीचे का पूरा भाग आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में परस्तुत कर दिया। लगभग छः सात महीने तक आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनके यहाँ रहे। आतिथ्य का भी उन्होंने ख़ूब हक़ अदा करने का प्रयास किया। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बचे हुए खाने में से ये खाना खाते थे। रिवायत में लिखा है कि जहाँ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उंगलियों के निशान होते थे वहाँ जो खाना बच कर आता था तो वहाँ से ये खाते थे, बड़े विचित्र स्नेह की कथाएँ हैं ये।

हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी सभी युद्धों में सम्मिलित हुए। ख़ैबर के युद्ध में जो यहूदी सरदार मारा गया था उसकी बेटी सफ़िया जब आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निकाह में आईं तो बिदाई के अगले दिन सुबह जब आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नमाज़ पढ़ाने के लिए बाहर आए तो देखा कि अबू अय्यूब अन्सारी बाहर पहरे पर खड़े हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनसे पूछा, क्या कारण है कि तुम पहरे पर खड़े हो? उन्होंने निवेदन किया कि हज़रत सफ़िया के प्यारे रिश्तेदारों को हमारे हाथों से हानि उठानी पड़ी है इस लिए मुझे विचार आया कि उनमें से कोई आकर बदला लेने का प्रयास न करे इस कारण से मैं पहरे के लिए आ गया। इस पर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनके लिए इस प्रकार दुआ फ़रमाई कि ऐ अल्लाह! अबू अय्यूब को सदैव अपनी सुरक्षा में रखना जिस प्रकार रात भर यह मेरी सुरक्षा के लिए सतर्क रहा। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आपकी सुरक्षा एवं शांति के लिए जो दुआ की थी उसी का परिणाम था कि आपने अनेक युद्धों में भाग लिया और हर अवसर पर ग़ाज़ी बन कर आए तथा बड़ी लम्बी आयु पाई।

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के एक सहाबी हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा थे जो अरब के प्रसिद्ध कवि भी थे तथा शायर-ए-रसूल की उपाधि से भी जाने जाते थे। बदर का युद्ध समाप्त होने के बाद विजय की सूचना भी मदीना को पहुंचाने वाले आप ही थे। हज़रत उर्वा से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक मज्लिस के पास से निकले जिसमें मुसलमान और यहूदी तथा मुशरिकीन मिले जुले बैठे थे। उस संगति में हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा भी थे। जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मज्लिस के निकट पहुंचे तो सवारी के कारण वहाँ थोड़ी धूल उड़ी। अब्दुल्लाह बिन उब्बयी ने अपनी नाक अपनी चादर से ढांक ली तथा कहा कि हम पर धूल न डालो। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें अस्सलामु अलैकुम कहा तथा उन्हें अल्लाह तआला की ओर बुलाया और उनके सामने क़ुर्आन पढ़ा। अब्दुल्लाह बिन उब्बयी कहने लगा कि यह अच्छी बात नहीं, यदि तुम जो कहते हो, सच है तो फिर भी हमारी मजलिसों में हमें कष्ट न दो और अपने डेरे की ओर लौट जाओ तथा जो तुम्हारे पास आए उसके सामने बयान करो। हज़र अब्दुल्लाह बिन रवाहा ने निवेदन किया कि या रसूलुल्लाह! आप हमारी मजलिस में पधारा करें, हमें यह अच्छा लगता है। यह उस स्वाभिमान और स्नेह की अभिव्यक्ति थी जो अब्दुल्लाह बिन रवाहा ने प्रकट की तथा उन सरदारों और दुनियादारों की तनिक भी चिंता न की।

हज़रत इब्ने अब्बास से रिवायत है कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक अभियान पर सहाबा को भेजा जिन

में अब्दुल्लाह बिन रवाहा भी शामिल थे। जुम्अः का दिन था, अभियान में सम्मिलित अन्य सहाबी तो सवेरे चल पड़े। इन्होंने कहा कि मैं पीछे रह कर जुम्अः की नमाज़ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ अदा करके फिर उनसे जा मिलूँगा। नमाज़ के बाद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जब उनको मस्जिद में देखा तो उनसे पूछा कि तुझे किस चीज़ ने अपने साथियों के साथ जाने से रोक रखा है। उन्होंने निवेदन किया कि या रसूलुल्लाह! मेरी घोर इच्छा थी कि मैं जुम्अः की नमाज़ में हुज़ूर स. के साथ शामिल होकर हुज़ूर का ख़ुत्बः सुन लूँ और फिर पीछे से जाकर उस मंडली से जा मिलूँगा। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि धरती पर जो कुछ है यदि तुम वह सब कुछ व्यय कर डालो तो जो लोग आदेशानुसार प्रातः काल ही उस अभियान पर जाकर अग्रणी हो गए, वह प्रतिफल और पुण्य तुम कदाचित प्राप्त नहीं कर सकते। इसके बाद, रिवायात में आता है कि जब किसी युद्ध अथवा अन्य अभियान पर जाना होता तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा सबसे पहले उस दस्ते में शामिल होते तथा सबके अन्त में मदीना लौटा करते थे।

हज़रत उर्वा बिन ज़ुबैर से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मौता के युद्ध में हज़रत ज़ैद बिन हारसा को सेना का सेनापति बनाया तथा फ़रमाया कि यदि ये शहीद हो जाएँ तो हज़रत जाफ़र बिन अबी तालिब सेना के प्रमुख होंगे, यदि वे भी शहीद हो जाएँ तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा अगुवाई करेंगे, यदि अब्दुल्लाह भी शहीद हो जाएँ तो मुसलमान जिस को चाहें उसको अपना सरदार बना लें। उस सेना के चलने तथा बिदा होने का समय आया तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रोने लगे। लोगों ने कहा कि अब्दुल्लाह रोते क्यूँ हो? कहने लगे कि ख़ुदा की क़सम मुझे कदाचित इस संसार का मोह नहीं है किन्तु मैंने इस आयत को कि- وَإِن مِّنكُمْ إِلَّا وَارِدُهَا كَانَ عَلَىٰ رَبِّكَ حَتْمًا مَّقْضِيًّا के विषय में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना है कि प्रत्येक व्यक्ति को एक बार अवश्य आग का सामना करना है। अतः मैं नहीं जानता कि पुल सिरात पर चढ़ने के बाद पार उतरने पर मेरा क्या हाल होगा। इन अल्लाह से भय रखने वालों के विषय में जो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सुन्दर परिणाम की सूचना दी उसका भी वर्णन मिलता है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मौता के युद्ध में सम्मिलित सेनापतियों के सम्बंध में फ़रमाया कि मैंने उनको जन्नत के सिंघासनों पर बैठे हुए देखा है।

जिहाद के अवसर पर हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा ने वीरता के बड़े जौहर दिखाए। मअसब बिन शीबा बयान करते हैं कि जब हज़रत ज़ैद और हज़रत जाफ़र भी शहीद हो गए तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा मैदान में आगे आए। जब उन्हें भाला लगा तो रक्त की एक धारा उनके शरीर से निकली, आपने अपने हाथ आगे बढ़ाए तथा उन पर रक्त लेकर अपने मुंह पर मल लिया। फिर वे दुश्मन तथा मुसलमानों की पंक्तियों के बीच गिर गए किन्तु अन्तिम सांस तक सेनापति के रूप में मुसलमानों का साहस बढ़ाते रहे और बड़े भावुक होकर साहस देते हुए मुसलमानों को अपनी सहायता के लिए बुलाते रहे कि देखो ऐ मुसलमानो, यह तुम्हारे भाई का शरीर शत्रुओं के सामने पड़ा है, आगे बढ़ो तथा शत्रुओं को अपने इस भाई के रास्ते से दूर करो और हटाओ। अतः मुसलमानों ने बड़े ज़ोर के साथ काफ़िरों पर आक्रमण किया तथा एक के बाद एक आक्रमण करते रहे, इसी बीच हज़रत अब्दुल्लाह की शहादत भी हो गई।

उनकी एक विशेषता के बारे में उनकी विधवा ने क्या ही सुन्दर साक्ष्य दिया है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा कभी घर से बाहर नहीं जाते थे जब तक कि दो रक्अत नमाज़ न अदा कर लें। इसी प्रकार जब घर में दाख़िल होते थे तो आपका पहला काम यह होता था कि वज़ू करके दो रक्अत नमाज़ नफ़ल अदा किया करते थे। हज़रत अबू लैला बयान करते हैं कि एक बार आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ुत्बः दे रहे थे। उसके बीच आपने फ़रमाया कि लोगो बैठ जाओ। हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा मस्जिद से बाहर ही थे तथा ख़ुत्बः सुनने के लिए उपस्थित हो रहे थे, वे वहीं पर बैठ गए, आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें सम्बोधित करते हुए फ़रमाया कि- زَادَكَ اللهُ حِرْصًا عَلَى طُوْعِيَةِ اللهِ وَطَوْعِيَةِ الرَّسُوْلِ अर्थात- ऐ अब्दुल्लाह बिन रवाहा! अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञापालन की तुम्हारी यह भावना अल्लाह तआला और बढ़ाए।

आप एक उच्च कोटि के कवि थे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान में एक पंक्ति हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा ने ऐसी कही कि उसे आपकी सर्वोत्तम रचना कहा जा सकता है। वह पंक्ति आपके दिल की दशा को ख़ूब बयान करती है जिसमें हज़रत अब्दुल्लाह ने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सम्बोधित करते हुए कहा कि मुहम्मद मुस्तुफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास यदि सत्य एवं यथार्थ को प्रकट करने के लिए वे समस्त खुले खुले तथा रौशन निशान न भी होते, जो आपके साथ थे तो भी केवल आपका चेहरा ही आपकी सच्चाई के लिए पर्याप्त था जो स्वयं आपकी सत्यता की घोषणा कर रहा था। ये लोग थे जो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सच्चे आशिक़ थे जिन्होंने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का चेहरा देखकर ही सत्य को पा लिया।

फिर इतिहास में हमें दो छोटी आयु के भाईयों का भी वर्णन मिलता है जिनका साहस अद्भुत था। हज़रत मुआज़ बिन

हारिस बिन रफ़ाअः तथा हज़रत मुअव्वज़ बिन हारिस बिन रफ़ाअः, बदर के युद्ध में सम्मिलित थे। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ीयल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि जब युद्ध आरम्भ हुआ तो मैंने अपने दाएँ बाएँ दृष्टि डाली तो देखा कि अन्सार के दो युवा मेरे साथ खड़े हैं। उन्हें देखकर मेरा दिल कुछ बैठ सा गया। मैं इस विचार में ही था कि ये बच्चे मेरी क्या रक्षा करेंगे कि इन लड़कों में से एक ने मुझसे धीरे से पूछा कि चाचा वह अबू जहल कहाँ है जो मक्का में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दुःख दिया करता था, मैंने ख़ुदा से प्रतिज्ञा की है कि मैं उसका वध करुंगा अथवा नष्ट करने के प्रयास में मारा जाऊंगा। कहते हैं कि मैंने अभी उसका उत्तर नहीं दिया था कि दूसरी ओर से दूसरे युवा ने इसी प्रकार धीरे से यही प्रश्न किया तो मैं उनका साहस देखकर चकित रह गया क्यूँकि अबू जहल लश्कर का सरदार था तथा उसके चारों ओर निपुण सैनिक थे। मैंने हाथ से संकेत करके कहा वह अबू जहल है। अब्दुर्रहमान कहते हैं कि मेरा संकेत करना था कि दोनों बच्चे बाज़ की भांति झपटे तथा दुश्मनों की पंक्तियों को चीरते हुए एक पल में वहाँ पहुंच गए और तेज़ी से वार किया कि अबू जहल तथा उसके साथी देखते ही रह गए और अबू जहल को नीचे गिरा लिया। इकरिमा बिन अबू जहल भी अपने बाप के साथ था, वह अपने बाप को तो नहीं बचा सका किन्तु उसने पीछे से मुआज़ पर ऐसा वार किया कि उसका दांया बाज़ू कट गया और लटकने लगा। मुआज़ ने इकरिमा का पीछा किया परन्तु वह बच गया। क्यूँकि कटा हुआ बाज़ू लड़ने में रोक पैदा कर रहा था तो मुआज़ ने उसे ज़ोर से खींच कर शरीर से अलग कर दिया तथा फिर लड़ने लग गए। तो उन लड़कों में ईमान के प्रति स्वाभिमान था, आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इश्क़ था, जिसने उन्हें निडर बना दिया कि वह व्यक्ति जो इस्लाम को नष्ट करना चाहता था, जो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कई वर्षों तक कठिनाईयाँ देता रहा उसका अंजाम हमारे हाथों से हो। यह आजकल के तथाकथित जिहादियों की भांति नहीं हैं कि युवाओं को, बच्चों को रैडिक्लाईज़ कर लेते हैं कि आओ और युद्ध करो इस्लाम के लिए अपितु एक उद्देश्य था उनका कि यदि अब दुश्मन हमें शांति नहीं देता इसके बावजूद कि हम अलग हो गए हैं तो फिर इसके लिए हमें प्रत्येक बलिदान देना चाहिए ताकि शांति की स्थापना हो, न कि उपद्रव उत्पन्न हो। अतः आजकल के जिहादियों में तथा उन जिहाद करने वालों में बड़ा अन्तर है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि-

मैं यही नमूना सहाबा का अपनी जमाअत में देखना चाहता हूँ कि वे अल्लाह तआला को प्राथमिकता दें तथा कोई बात उनके मार्ग में रोक न हो, वे अपनी जान और माल को तुच्छ समझें। मैं देखता हूँ कि कुछ लोगों के कार्ड आते हैं किसी व्यवसाय अथवा काम में हानि हुई या कोई परीक्षा की घड़ी आ गई तो झट सन्देह के घेरे में आ गए कि पता नहीं कि हमने मसीह मौऊद को मानकर कोई चूक तो नहीं कर ली। फ़रमाते हैं कि ऐसी अवस्था में प्रत्येक व्यक्ति समझ सकता है कि वास्तविक लक्ष्य और उद्देश्य से वे कितना दूर हैं। विचार करो कि क्या अन्तर है सहाबा में तथा इन लोगों में। सहाबा यह चाहते थे कि ख़ुदा तआला को प्रसन्न करें, चाहे उसकी राह में कैसी ही कठिनाईयाँ और हानियाँ उठानी पड़ें यदि कोई कठिनाई तथा जटिलता में नहीं पड़ता और उसे देर होती तो वह रोता और चिल्लाता था। वे समझ चुके थे कि इन परीक्षाओं के पीछे ख़ुदा तआला की प्रसन्नता का प्रमाण पत्र और ख़ज़ाना छुपा हुआ है।

फिर आप फ़रमाते हैं कि क़ुर्आन शरीफ़ उनकी प्रशंसा से भरा हुआ है उसे खोल कर देखो। सहाबा का जीवन आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सच्चाई का क्रियान्वित प्रमाण था। सहाबा जिस स्तर पर पहुंचे थे उसको क़ुर्आन शरीफ़ ने इस प्रकार बयान फ़रमाया है- فَمِنْهُم مَّن قَضَىٰ نَحْبَهُ وَمِنْهُم مَّن يَنتَظِرُ अर्थात- कुछ उनमें से शहादत पा चुके हैं तथा उन्होंने मानो यथार्थ की प्राप्ति कर ली है तथा कुछ इस प्रतीक्षा में हैं, चाहते हैं कि शहादत का सौभाग्य प्राप्त हो। सहाबा दुनिया की ओर नहीं झुके कि आयु लम्बी हो तथा इतनी धन सम्पत्ति मिले तथा ऐसा निश्चिंत जीवन और समृद्धि का सामान हो। आप फ़रमाते हैं कि मैं जब सहाबा के इस नमूने को देखता हूँ तो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दिव्यात्मा की कृपा के कमाल को विवशता पूर्वक स्वीकार करना पड़ता है कि किस प्रकार आपने उनकी काया ही पलट दी तथा उन्हें ख़ुदा की ओर झुका दिया। اللهم صلى على محمد وعلى آل محمد وبارك وسلم

आप फ़रमाते हैं कि हमारा यह कर्त्तव्य होना चाहिए कि हम अल्लाह तआला की प्रसन्नता की प्रसन्नता प्राप्ति के लिए प्रयासरत रहें तथा इसको अपना वास्तविक उद्देश्य बना लें। हमारा सम्पूर्ण प्रयास एवं गतिविधियाँ अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्ति के लिए होनी चाहिएँ चाहे वे कठिनाईयों और दुविधाओं के द्वारा ही प्राप्त हों। यह अल्लाह तआला की प्रसन्नता संसार तथा इसकी समस्त समृद्धि से श्रेष्टतम है। अल्लाह तआला हमें यह कर्त्तव्य अदा करने का सामर्थ्य प्रदान करे।

ख़ुत्बः जुम्अः के अन्त में हुज़ूर-ए-अनवर ने मुकर्रम अलहाज इसमाईल बी के आडू साहब के सद्गुण बयान फ़रमाए तथा जुम्अः की नमाज़ के पश्चात नमाज़े जनाज़ा ग़ायब पढ़ाई।

**TOLL FREE NO: 18003010213 1**